ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA
Vol. 6, Issue 24, October-December, 2019
Page Nos. 285-288

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

आभामण्डल और लेश्या का प्ररूपण

डॉ. अमिता जैन*

शोध सारांश

मनुष्य में आभामण्डल और लेश्या की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन दोनों की क्रिया और प्रतिक्रिया की अभिव्यंजना पृथक्–पृथक् रूप में अभिलक्षित होती है। लेकिन गहनता से चिन्तन, मनन, विश्लेषण, संश्लेषण करने पर यह अवलोकित होता है कि इन दोनों का प्रभाव मानव जीवन को रूपान्तरित कर देता है। शरीर के चारों ओर की रश्मियां आभामण्डल, सिर के चारों ओर की रश्मियां भामण्डल तथा चेतना की रश्मियां लेश्या है। सुख–दुःख के जीवन में इनका विशेष अभिलक्षण प्ररूपित है।

- **मुख्य शब्द** – आभामण्डल, पुद्गल शरीर , लेश्या, कषाय

- **प्रस्तावनाः**

➢ **आभामण्डल का प्ररूपण :**

मृत शरीर या लाश के आभामण्डल नहीं होता है। संसार के सभी व्यक्तियों में आभामण्डल होता है। जिस प्रकार सूर्य की रोशनी उसे चारों तरफ से घेरे रहती है, उसी प्रकार व्यक्ति के प्राण भी उसे बाहर और भीतर दोनों तरफ से घेरे रहते हैं। महान् वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु ने एक प्रयोग किया– एक पौधा लिया उसे जहर से सिंचन किया गया। पौधे को जहर से सिंचन करने के बाद पौधा जीवित रहा। मनुष्य को भी वही जहर दिया गया और मनुष्य पर भी उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अतः पौधे और मनुष्य के प्राण में कोई अन्तर नहीं होता। दोनों में आभामण्डल होता है। जैसे प्राण पौधे में होता है वैसा मनुष्य में होता है। क्योंकि वह जहर नकली था। जब पौधे को असली जहर दिया गया तो पौधा नीला होकर गिर पड़ा। एक प्रयोग यह करके देखा गया कि पौधे के पास भी यदि हिंसक भाव का व्यक्ति खड़ा किया गया और पौधे का रंग बदल कर नीला हो गया। हम अपनी आंखों से अपना आभामण्डल देख नहीं पाते। पूरे शरीर के चारों ओर जो वलय रहता है, उसे आभामण्डल कहते हैं। इसे ओरा (Aura) भी कहते हैं। भगवान् के प्रतिमा के पीछे आभामण्डल होता है वैसे ही मनुष्य के पीछे आभामण्डल होता है। जैसे गिरगिट अपना रंग स्वयं बदलता है वैसे ही भाव, दशाएँ हमारे मन का रंग बदलती हैं। जैसे किसी महापुरूष/संत/ऋषि/मुनि के पास बैठने से शांति, प्रसन्नता, आनन्द का आकर्षण पैदा होता है, इसी कारण व्यक्ति 3 – 4 घण्टे संत मुनी के पास बैठा रहता है, हिंसक, लड़ाकू झगड़ालू के पास आधा घण्टा बैठना मुश्किल होता है। क्योंकि संत का आभामण्डल व्यक्ति के आभामण्डल को प्रभावित करता है।

वलय

*सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाड़नूँ

आभामण्डल में व्यक्ति अपने आपको देख सकता है, विचार को देख सकता है, भावों को देख सकता है, व्यवहार देख सकता है। यह एक दर्पण है। जड़ और चेतन प्राणियों सभी में आभामण्डल होता है।

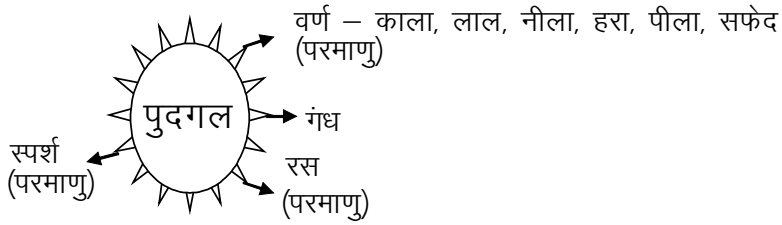

पुद्गल परमाणु से बना हैं

यह पुद्गल शरीर और मन को प्रभावित करता है। जैसे सूर्य की रश्मियाँ का व उनके सात रंगों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है, वैसे चेतना की रश्मियाँ व उनके रंग का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। व्यक्ति के आभामण्डल मे जिस रंग की प्रधानता होगी उसी के अनुरूप उसमें व्यक्तित्व और उसके गुण होंगे। कक्षा का छात्र राम शिक्षक राजेश की कक्षा लेना पसन्द करता है, मोहन की नहीं। क्योंकि शिक्षक राजेश के भामण्डल ने राम के आभामण्डल को प्रभावित किया है। **ओल्ड टेस्टामेंट में सोलोमेन का प्रसिद्ध वचन है** 'जैसे आदमी सोचता है, वैसा हो जाता हैं।'(As a man thinks so he becomes) मनुष्य जैसा है, वह अपने कारण है, वह अपना निर्माण स्वयं करता है, वह विध्वंसकारी या सृजनकारी है तो स्वयं के कारण है। व्यक्ति स्वयं उसके दुःख का या सुख का कारण हैं। बंधन या मुक्ति व्यक्ति के स्वयं का परिणाम है। उसकी वृत्तियाँ ही सुख और दुःख देती है। घम्म पद में बुद्ध कहते हैं– तुम जो हो वह अतीत में सोचे हुए विचारों का परिणाम है। तुम जो होंगे, वह आज सोचे गये विचारों का फल होगा।

इसलिए जहाँ–जहाँ विचार हैं वहाँ – वहाँ संसार है।

इसलिए जहाँ–जहाँ निर्विचार हैं वहाँ–वहाँ मुक्ति है।

- **लेश्या का प्ररूपण :**

धारा → एक धारा → भाव
धारा → द्वितीय धारा → रंग
भाव + रंग = लेश्या

–लेश्या विशिश्ट रंग वाले पुदगल द्रव्य हैं।

– स्थूल व सूक्ष्म शरीर के मध्य सम्पर्क सूत्र हैं।

लेश्या दो प्रकार की होती है –

- द्रव्य लेश्या – शरीर के वर्ण और आणविक आभा।
- भाव लेश्या– शरीर के विचार

लेश्या रंग का सिद्धान्त है। किसी प्रियजन का हादसा या दुर्घटना होने पर व्यक्ति का रंग बदल जाता है, थप्पड़ मारने पर रंग बदल जाता है। किसी के गिरे रूपये उठाने पर रंग बदल जाता है। जैसे सूरज के प्रकाश में नीला, हरा, लाल, पीला, जामुनी, नारंगी और बैंगनी रंग होते हैं वैसे ही मनुष्य के आभामण्डल में कृष्ण, नीला, कापोत, तैजस्, पद्म, श्वेत लेश्या होती हैं। पदार्थ में रंग होते हैं, आभामण्डल के वलय में रंग होते हैं। चित्त की कषाय युक्त वृत्ति का नाम लेश्या है। जो हमारे चित्त को चारों तरफ से आश्लिष्ट कर लें जैसे पशु को बांधने के लिए फन्दा होता है वैसे मनुष्य को चित्त की

वृत्तियां, संस्कार और लेश्याएं बांधती हैं। उस फन्दे या रस्से को लेश्या कहते हैं। क्रोध, लोभ, मोह, माया, अभिमान और राग–द्वेष ही कषाय हैं। कषाय ही मनुष्य को बांधते हैं। जो मनुष्य को कस ले या बांध ले उसे ही कषाय कहा गया है। मनुष्य इन कषायों के लेश्याओं से बंधा हुआ है। पतंजलि ने चित्त की तीन वृत्तियां बतायी हैं– सुषुप्ति, स्वप्न और जागृति। **सिग्मण्ड फ्रायड** ने भी चित्त की तीन वृत्तियां बतायी हैं– चेतन मन, अवचेतन मन और अचेतन मन। **महावीर** ने चित्त की छः अवस्थाएं कहीं, जिन्हें 'लेश्या' कहा गया है– 1 कृष्ण लेश्या, 2. नील लेश्या, 3. कापोत लेश्या, 4. तेजो लेश्या, 5. पद्म लेश, 6. शुक्ल लेश्या।

मनुष्य के चित्त पर ये छः प्रकार के पर्दे पड़े हुए हैं। जब तक वह इन पर्दों को नहीं हटायेगा तब तक उसका यथार्थ सत्य से साक्षात्कार नहीं हो सकता। मनुष्य के भीतर ये छः कमरे हैं। इन छः कमरों पर ताले लगे हुए हैं। मनुष्य अपने इन तालों को अपनी शक्ति जागृत कर खोल सकता है। अपने अन्तरात्मा के इन पर्दों को मनुष्य स्वयं ही खोल सकता है। इन तालों की चाबी स्वयं मनुष्य के पास है। सुबह जब उठते हैं, कमरे में अन्धेरा होता है, उस समय पलक खोलकर नाक के अग्रभाग पर चित्त केन्द्रित करेंगे तो वहां पर कुछ धुंधला सा नजर आयेगा। यह धुंधलापन ही चित्त का प्रतिबिम्ब है, यही हमारी मनोवृत्ति और लेश्या का दर्पण है। इसलिए योगशास्त्र में नासाग्र पर ध्यान केन्द्रीकरण की बात कही गई है। ये छः लेश्याएं छः रंगों को प्रकट करती है–

1. कृष्ण लेश्या – काला रंग
2. नील लेश्या – नीला रंग
3. कापोत लेश्या – कबूतरी रंग
4. तेजो लेश्या – लाल रंग
5. पद्म लेश्या – पीला रंग
6. शुक्ल लेश्या – सफेद रंग

आज उपचार पद्धति में रंग विज्ञान का प्रयोग किया जाता है। रंगों पर ध्यान कराके रोगों का उपचार किया जाता है। जैसे– क्रोध आने पर गुलाबी रंग का ध्यान। हिंसा की प्रवृत्ति होने पर श्वेत रंग का ध्यान, उदास और निराश होने पर पीले रंग का ध्यान, रंगों का प्रभाव हमारे चित्त, संस्कार और वृत्तियों को बदलने में प्रभावी होता है।

– लेश्या चेतना की रश्मियाँ हैं।
– पौद्गलिक पर्यावरण है।
– जीव के चारों ओर रश्मियाँ का आवरण है।
– जीव और पुद्गल दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।
– वृत्तियाँ, भाव या आदत को उत्पन्न करने वाला सशक्ति तन्त्र को लेश्या कहा है।
– लेश्या चेतना का सूक्ष्म स्तर है।

मनुष्य की आत्मा अच्छे और बुरे परदों के बीच छिपी हुई–

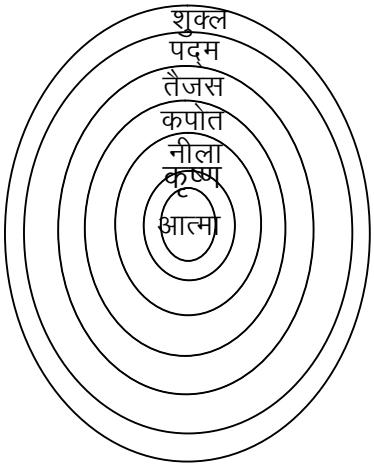

प्रथम तीन परदे गंदे / बुरे

अन्तिम तीन परदे अच्छे

यह आवरण ही लेश्या हैं या परदे

- **निष्कर्ष :**

मनुष्य सुखी है तो अपने कारण है, दुःखी है तो अपने कारण। यदि वह तनाव, चिन्ता, अवसादग्रस्त है तो अपने कारण और यदि प्रसन्न, खुशी, प्रमुदित है तो अपने कारण। वह स्वयं राग–द्वेष में फंसता है और स्वयं ही उससे मुक्त हो सकता है। कोई दूसरा उसे बंधन में बांधने वाला नहीं है न उसे कोई बंधन से मुक्त करने वाला है। वह स्वयं ही उसका संचालन करने वाला है, स्वयं ही उसका भोक्ता है। सारा गुण–द्वेष, सारा दायित्व स्वयं का है। उसके चित्त में उठने वाले राग–द्वेष की तरंगे ही उसके बंधन का कारण है। उसके अच्छे और बुरे विचार ही उसे जकड़ते हैं। मनुष्य के चित्त में सदैव संवेग, राग–द्वेष की वृत्तियां तथा कषाय युक्त विचार उठते रहते हैं यही लेश्या है, आभामण्डल प्राण युक्त प्राणियों में होता है। इसका प्रभाव समीप रहने वाले प्राणियों पर भी पड़ता है, हिंसक प्राणी हमारे पास है तो नकारात्मक प्रभाव हमारे ऊपर परिलक्षित होगा।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची :**

1. आध्यात्म योग, मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान, वर्श–39, अंक 03, मार्च 2018 प्रेक्षा फाउण्डेशन, तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ, राजस्थान 341306 पृष्ठ संख्या–14
2. आध्यात्म योग मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान, वर्श 39, अंक 02, फरवरी 2018 प्रेक्षा फाउण्डेशन, तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ, राजस्थान 341306पृष्ठ संख्या– 57
3. समणी मल्लिप्रज्ञा 2009 जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं योग जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ, राजस्थान 341306पृष्ठ संख्या– 77
4. साध्वी विश्रुतविभा, साध्वी विमलप्रज्ञा, सितम्बर 2008 : महाप्रज्ञ ने कहा–5, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, नई दिल्लीपृष्ठ संख्या– 49
5. समणी ऋजुप्रज्ञा 2006 व्यक्तित्व विकास और योग जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ, राजस्थान 341306 पृष्ठ संख्या– 97

❒❒❒